Padma Bhushan

DR. BIBEK DEBROY (POSTHUMOUS)

Dr. Bibek Debroy was a distinguished economist, scholar, and policy advisor, known for his significant contributions to India's economic governance, legal reforms, and philosophical discourse. He served as the Chairman of the Economic Advisory Council to the Prime Minister (EAC-PM) from 2017-2024 and was instrumental in shaping several critical policy frameworks that influenced India's economic and governance landscape.

2. Born on 25th January, 1955, Dr. Debroy pursued his bachelor's degree in Economics from Presidency College, Kolkata; Master's degree in Economics from the Delhi School of Economics and MSc. in Economics from Cambridge University. A prolific academic, he taught at Kirori Mal College (University of Delhi); Gokhale Institute of Politics and Economics, and the Indian Institute of Foreign Trade. He also held research and advisory positions at leading think tanks, including the National Council of Applied Economic Research (NCAER).

3. Dr. Debroy was a key figure in shaping India's economic policies, particularly through his work with the NITI Aayog (2015-2019) and as Chairman of the High-Powered Committee for Restructuring Indian Railways (2014-2015). His recommendations led to major structural reforms in the railway sector, focusing on efficiency, financial restructuring, and modernization. He also served as a Consultant in the Department of Economic Affairs, Ministry of Finance (1994-1995), where he worked on fiscal and trade policy reforms. His contributions extended to legal and governance reforms as well. As Project Coordinator for the LARGE (Legal Adjustments and Reforms for Globalizing the Economy) initiative and Visiting Professor at the National Law School of India University, Bangalore (1993-1998), he played a pivotal role in modernizing India's regulatory and legal framework for economic liberalization. He also served as a member of the National Manufacturing Competitiveness Council and advised multiple state governments, including Jharkhand and Rajasthan, on economic and administrative reforms.

4. Beyond Economics, Dr. Debroy was an acclaimed Sanskrit scholar and translator, renowned for his unabridged translations of the Mahabharata, Valmiki Ramayana, Bhagavata Purana, and the Vedas. His work in bringing ancient Indian texts to a wider audience was widely appreciated, as he combined his deep historical and philosophical knowledge with contemporary economic insights. A prolific writer, he authored and edited over 100 books and numerous research papers spanning topics such as economic policy, legal reforms, governance, and mythology.

5. Dr. Debroy also played a significant role in India's academic and statistical institutions, serving as the President of the Indian Statistical Institute (2018- 2022) and Chancellor of Deccan College Postgraduate and Research Institute. His contributions to policy, governance, and literature were widely recognized, and in 2015, the Government of India conferred upon him the Padma Shri. His legacy as a thought leader, policy reformer, and scholar continues to inspire economists, policymakers, and intellectuals. His ability to seamlessly bridge disciplines—economics, law, governance, and ancient philosophy- made him one of India's most influential minds in recent times.

6. Dr. Debroy passed away on 1st November, 2024.

डॉ. बिबेक देबरॉय (मरणोपरांत)

डॉ. बिबेक देबरॉय एक प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री, विद्वान और नीति सलाहकार थे, जिन्हें भारत के आर्थिक शासन, कानून संबंधी सुधारों और दार्शनिक विमर्श में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए जाना जाता है। उन्होंने वर्ष 2017–2024 तक प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद (ईएसी–पीएम) के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया और भारत के आर्थिक और शासन परिदृश्य को प्रभावित करने वाली कई महत्वपूर्ण नीतिगत रूपरेखाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

2. 25 जनवरी, 1955 को जन्मे, डॉ. देबरॉय ने कोलकाता के प्रेसीडेंसी कॉलेज से अर्थशास्त्र में स्नातक; दिल्ली स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स से अर्थशास्त्र में मास्टर डिग्री और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एमएससी की डिग्री हासिल की। उन्होंने किरोड़ीमल कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय); गोखले इंस्टीट्यूट ऑफ़ पॉलिटिक्स एंड इकोनॉमिक्स और इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ फॉरेन ट्रेड में पढ़ाया। उन्होंने नेशनल काउंसिल ऑफ़ एप्लाइड इकोनॉमिक रिसर्च (एनसीएईआर) सहित प्रमुख थिंक टैंक में शोध और सलाहकार पदों पर भी कार्य किया।

3. डॉ. देबरॉय भारत की आर्थिक नीतियों को आकार देने, विशेष रूप से नीति आयोग (2015–2019) के साथ उनके कार्य और भारतीय रेलवे के पुनर्गठन के लिए उच्चाधिकार प्राप्त समिति के अध्यक्ष (2014–2015) के रूप में प्रमुख व्यक्ति थे। उनकी सिफारिशों से रेलवे के क्षेत्र में प्रमुख संरचनात्मक सुधार हुए, जो दक्षता, वित्तीय पुनर्गठन और आधुनिकीकरण पर केंद्रित थे। उन्होंने वित्त मंत्रालय के आर्थिक कार्य विभाग में एक सलाहकार (1994–1995) के रूप में भी कार्य किया, जहाँ उन्होंने राजकोषीय और व्यापार संबंधी नीतिगत सुधारों पर काम किया। उनका योगदान कानूनी और शासन सुधारों में भी रहा। एलएआरजीई (अर्थव्यवस्था के वैश्वीकरण के लिए कानूनी समायोजन और सुधार) पहल के लिए परियोजना समन्वयक और नेशनल लॉ स्कूल ऑफ़ इंडिया यूनिवर्सिटी, बैंगलोर में विजिटिंग प्रोफेसर (993–1998) के रूप में कार्य करते हुए उन्होंने आर्थिक उदारीकरण के लिए भारत के नियामक और कानूनी ढांचे को आधुनिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने राष्ट्रीय विनिर्माण प्रतिस्पर्धात्मकता परिषद के सदस्य के रूप में भी काम किया और झारखंड और राजस्थान सहित कई राज्य सरकारों को आर्थिक और प्रशासनिक सुधारों पर सलाह दी।

4. अर्थशास्त्र के अतिरिक्त, डॉ. देबरॉय एक प्रशंसित संस्कृत विद्वान और अनुवादक थे, जो महाभारत, वाल्मीकि रामायण, भागवत पुराण और वेदों के अपने विस्तृत अनुवाद कार्य के लिए प्रसिद्ध थे। प्राचीन भारतीय ग्रंथों को व्यापक जनता तक पहुँचाने में उनके काम की बहुत अधिक सराहना की गई, क्योंकि उन्होंने अपने गहन ऐतिहासिक और दार्शनिक ज्ञान को समकालीन आर्थिक अंतर्दृष्टि के साथ जोड़ा। एक सफल लेखक के रूप में, उन्होंने आर्थिक नीति, कानूनी सुधार, शासन और पौराणिक कथाओं जैसे विषयों पर 100 से अधिक पुस्तकें और कई शोध पत्र लिखे और संपादित किए।

5. भारतीय सांख्यिकी संस्थान के अध्यक्ष (2018–2022) और डेक्कन कॉलेज स्नातकोत्तर और अनुसंधान संस्थान के कुलाधिपति के रूप में कार्य करते हुए डॉ. देबरॉय ने भारत के शैक्षणिक और सांख्यिकीय संस्थानों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नीति, शासन और साहित्य में उनके योगदान को व्यापक रूप से मान्यता मिली और वर्ष 2015 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया। एक विचारक, नीति सुधारक और विद्वान के रूप में उनकी विरासत अर्थशास्त्रियों, नीति निर्माताओं और बुद्धिजीवियों को प्रेरित करती रहेगी। अर्थशास्त्र, कानून, शासन और प्राचीन दर्शन जैसे विषयों को सहजता से जोड़ने की उनकी क्षमता ने उनको हाल के समय में भारत के सबसे प्रभावशाली लोगों में से एक बना दिया।

6. 1 नवंबर, 2024 को डॉ. देबरॉय का निधन हो गया ।